

## पद २९ (कन्नड)

(राग: यमन कल्याण – ताल: तिलवाडा)

ब्यागने गुरुवीगे शरण नी होगो ॥ध्रु.॥ हृदय कमलदल्ली गुरु चरण  
के इट्टु । प्रेमल्लि जोगळ जोगो ॥१॥ माणिकने गुरु शरणक्के होगी ।  
स्वयमेव ब्रह्मनी आगो ॥२॥